

२८ अगस्त

पर्यावरण दिवस



सम्बत् १७८७, भाद्रपद शुक्ल दशमी दिनांक २८ अगस्त १७३०
'सिर साटे रूख रहे तो भी सस्तो जाण - अमता देवी

२८ अगस्त
पर्यावरण दिवस

राम प्रकाश मिश्र

२८ अगस्त पर्यावरण दिवस

पंडित रामप्रकाश मिश्र

प्रकाशक

भारतीय मजदूर संघ

रामनरेश भवन, तिलक गली, चूना मंडी, पहाड़गंज
नई दिल्ली - १६१६००५१

प्रथम संस्करण अप्रैल 2005

प्रकाशक

भारतीय मजदूर संघ

रामनरेश भवन, तिलक गली, चूना मंडी, पहाड़गंज
नई दिल्ली

अक्षर संयोजन एवं मुद्रक

जुपिटर प्रिन्टर्स

देश की माटी देश का जल
हवा देश की देश का फल
सरल बने प्रभु सरल बने ।
देश के घर और देश के घाट
देश के वन और देश के बाट
सरल बने प्रभु सरल बने ।
देश के तन और देश के मन
देश के घर के भाई बहन
विमल बने प्रभु विमल बने ।

रविन्द्रनाथ ठाकुर

विषय प्रवेश

कवि जिस माटी के गुण गाते थकते नहीं थे । आज वही माटी थक चली है । सुजला, सुफला, शस्य श्यामला धरती बंजर बनती जा रही है । भूमि और वनों की रक्षा के लिए उठा चिपको आन्दोलन यदा-कदा, यत्र-सर्वत्र दिखाई दे रहा है । भीमसार जैसे आन्दोलन यह बता रहे हैं कि पर्यावरण समस्या का हल तकनीक या बेहतर प्रबन्ध में नहीं अपितु अपनी पुरानी परम्पराओं में है ।

विगत १८ वर्षों से देश के बड़े हिस्से में अकाल की छाया रही । वह छाया चाहे अधिक वर्षा की रही हो या सूखे की । प्रकृति की निर्भरता से अपने को मुक्त मानने का दम्भ भरने वाले पजाब व हरियाणा भी इसकी चपेट में आखिर आ ही गये ।

अकाल से भी भंयकर है अकेले पड़ जाना । समाज में सकट के समय एक दूसरे को सहयोग देने की जो परम्परायें हमारे पूर्वजों ने बनाई थी वह धीरे- धीरे समाप्त होती जा रही है । संवेदना की जिस पूजी के सहारे समाज बड़े-बड़े संकट पार कर लेता था क्या उस पूजी को अब हम बचा पायेंगे ?

खेत की जमीन, चरागाह की जमीन, जंगल की जमीन की बहुत उपेक्षा हुई है । खेत की जमीन ट्रैक्टर की जुताई से, रासायनिक खाद डालने से धीरे-धीरे बंजर हो रही है । धरती का चेहरा बिगाड़ने में खनन उद्योग का बहुत बड़ा हाथ है । क्या इस उद्योग से धरती की बर्बादी को हम बचा पायेंगे?

जंगल की बर्बादी और उससे पर्यावरण बिगाड़ने का दोष कृषि मंत्रालय ने भेड़ बकरियों पर मढ़ दिया । भेड़-बकरी पालन के मूल्यांकन हेतु एक टास्क फोर्स भी गठित कर दिया । जबकि बड़े लोग, बड़ी सड़के, बड़े शहर, बड़े-बड़े बाँध तथा बड़े उद्योग, जंगलों और चरागाहों को हड़प ले रहें हैं जब कि थोड़े से भी कम में गुजर कर लेने वाली भेड़-बकरियों के पालक पर सारी उगलियाँ उठ रही हैं । हम पर्यावरण की चपेट में हैं । क्या इस कलुषित चपेट से हम अपने को बचा पायेंगे? उड़ीसा में गंध मार्दन पर्वत में अच्छे किस्म का बाक्सાइट है । भारत अल्युमीनियम कम्पनी की लोलुप दृष्टि इस पर है । यहाँ के नवयुवकों ने "सुरक्षा युवा परिषद" बनाया है । यहाँ की २२ नदियों में साल भर पानी बाँक्सાइट के कारण रहता है । सरकारी तंत्र भारत अल्युमीनियम कम्पनी को सहायता एवं सुरक्षा देकर खनन कार्य चालू कराना चाहता है । क्या नवयुवकों की "सुरक्षा युवा

परिषद'' खनन कार्य, जिसकी धूल से यही का पर्यावरण बिगड़ेगा रूकवा पाने में सफलता पायेंगे । उपरोक्त ज्वलत प्रश्न पर्यावरण के सम्बन्ध में है किंतु इसका उत्तर मिलना सन्देहास्पद है ।

अंग्रेज राज के समय तालाबों की बड़ी उपेक्षा हुई । अब तो हम स्वतंत्र हैं ?? नये तालाब तो दूर की बात रही पुराने तालाब भी पुरते जा रहे हैं । आज जल स्रोत खतरे में पड़ गये हैं । उन पर निर्भर समाज चौपट हो गया है । जब तक समाज अपनी प्राकृतिक सम्पदा के साथ अपने सम्बन्ध नहीं बनाता है तब तक उसकी रक्षा होना संभव नहीं है ।

पहले प्राकृतिक सम्पदा का संचालन समाज नियंत्रक प्रक्रिया से होता था । लेकिन इस सामुहिक सम्पदा को राज्य की सम्पत्ति में बदलवाने की नीति ने इसे प्रशासनिक नियंत्रण के घेरे में ला दिया है । यही कारण है कि पर्यावरणीय समस्या उत्पन्न होने की । अगर पर्यावरण ठीक बनाए रखना है. तो शहरों और गाँवों के विकास के लिए कोई और तरीका ढूँढ़ना होगा । परस्पर सहजीवन के आधार पर शहरी और ग्रामीण विकास करना होगा । साथ में पर्यावरण शुद्ध बना रहे इस पर भी ध्यान देना होगा ।

पर्यावरण में सुधार के लिये जहाँ अनेक उपाय हैं वही पेड़-पौधे इसको सुरक्षित रखने में सहायक होंगे । इसके लिए ग्रामीण व शहरी जनता, सामाजिक संस्थाएँ तथा श्रम संगठनों को आगे आना होगा । वृक्ष लगाओ अभियान चलाकर पर्यावरण की सुरक्षा की जा सकती है । यदि ऐसा हम करते हैं तो वृक्ष की रक्षा में पेड़ से चिपक कर अपना शीष कटा कर अपने को बलिदान कर देने वाली, विश्व में एक मिशाल कायम कर देने वाली महिला वीरागना अमृता देवी के प्रति सच्ची श्रद्धाजलि होगी ।

वीरागना अमृता देवी का अद्भुत बलिदान जन-जन तक पहुँचे यही इस पुस्तक के लिखने का एक मात्र उद्देश्य है । इससे हमें कितनी सफलता मिली है यह निर्णय करने का काम पाठकों को सौंपता हूँ । अन्त में यह अपेक्षा करता हूँ कि २८ अगस्त को पर्यावरण दिवस मना कर एक बाल तरु को गाँजे-बाँजे के साथ कहीं रोपन कर वीरागना अमृता देवी को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करें ।

पर्यावरण-दिवस

२८ अगस्त २००४ -

रामप्रकाश मिश्र

२८ अगस्त पर्यावरण दिवस

पूरे ब्रह्माण्ड की एक लय होती हैं। जहाँ लय है वहीं गति है। निरन्तरता है। जीवन प्रवाह है। यदि यह लय बिगड़ गई तो प्रलय ही शेष बचता है। आज -का मनुष्य जितनी तेजी से प्रलय की ओर भाग रहा है शायद यह बात वह भी नहीं जानता है।

धरती का मिजाज जब तक सामान्य है तभी तक हम सुरक्षित हैं। सुरक्षा केवल मानव के लिए ही नहीं अपितु पशु पक्षी वनस्पति आदि की सुरक्षा। जरा कल्पना कीजिए कि यदि धरती का मिजाज यकायक बहुत गरम हो जाय तो क्या यह सब सुरक्षित रह पायेंगे? क्या पेड़ पौधे बच पाएंगे? क्या मछलियाँ स्वच्छन्द राप से जल में विहार करती रहेगी जैसा वे आज कर रही है। बड़े नगरों में सीना तानें बहुमंजिली अट्टालिकायें खड़ी रह सकेंगी? नहीं! कदापि नहीं! इसलिए इस समस्या पर ठण्डे मन से सोचने, विचार करने की आवश्यकता है।

वायुमण्डल में गैस का जमाव का विधिवत अध्ययन १९५८ में प्रारंभ हो गया जो १९८८ में पूरा हुआ। नासा ने विगत सौ वर्षों के तापमान के अध्ययन करने के बाद बताया कि पृथ्वी का औसत तापमान .६ से १.२ डिग्री सेन्टी ग्रेड बढ़ा है। इसके अलावा जहां ४० वर्ष पहले पंखा नहीं चलता था आज वहां पंखे के बिना रहना कठिन लगता है। १९६० में दिल्ली में आयोजित अन्तराष्ट्रीय उर्जा सम्मेलन में यह स्वीकार किया गया कि ग्रीन हाउस गैसों के स्तर में बढ़ोत्तरी के कारण अनावृष्टि, सूखा प्रकोप बढ़ सकते हैं। उड्स सेक्टर रिसर्च नेसाचुयेट्रस की रिपोर्ट के अनुसार लगभग एक खरब टन के बीच कार्बन-डाई-ऑक्साइड प्रति वर्ष वायुमण्डल में पहुंच रही हैं। भारत में यह मात्रा ४७.६ करोड़ टन है। इस सृष्टि के संचालन में कार्बन-डाई-ऑक्साइड खलनायिका है। यह अकेली नहीं है। गैस की सरदारिन भले ही कार्बन डाईऑक्साइड है, उसके साथ मिथेन नाइट्रो ऑक्साइड तथा क्लोरो कार्बन आदि।

धुआँ उगलती चिमनियाँ, प्रदूषण के साथ धुआँ का गुब्बार छोड़ते वाहन, 'फेक्टरियों से निकले रसायन आदि पृथ्वी के ऊपर एक ऐसा परत बना देते हैं जो ऊष्मा को आगे नहीं बढ़ने देती है। धरती ठण्डी सांस भी नहीं ले पाती है, जिससे उसे सदैव गर्म ही रहना पड़ता है। यही आँच अवश्य उबाल लायेगी कुछ ऐसा ही पृथ्वी के साथ हो रहा है।

सुरसा की तरह कार्बन डाईऑक्साइड अपना मुंह फैलाती जाती है। प्रतिवर्ष १४ प्रतिशत बढ़ती है। मिथेन एक प्रतिशत तथा नाइट्रोजन २ प्रतिशत बढ़कर हमारे सामने खतरनाक स्थिति खड़ी कर देती है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि ईंधन जलाने से जो कार्बन डाईऑक्साइड पैदा होती है उसका पचास प्रतिशत भाग तो वातावरण में रहता है। जब कभी कार्बन डाईऑक्साइड में दस प्रतिशत की वृद्धि होती है तो पूरे तापमान में तीन सेन्टीग्रेड की वृद्धि होती है। तापमान बढ़ने की यह गति आगे चलकर कई गुणा हो जाएगी जो एक विकट समस्या खड़ी कर सकती है। यदि ऐसा ही रहा तो ध्रुव प्रदेशों और ऊँचे पर्वतों के हिम खण्ड पिघलेगे और जलप्लावन होगा। यह विनाश की ऐसी कहानी लिखेगा कि जो मानव इतिहास शायद आज तक नहीं लिख पाया होगा। पानी का प्रवाह समुद्र तल से ऊँचा उठेगा। ध्रुव प्रदेशों का तापमान यदि १० सेन्टीग्रेड भी बढ़ जाय तो अनर्थ हो सकता है क्योंकि तब समुद्र का जल स्तर कम से कम पाँच मीटर ऊपर आ जायेगा। समुद्र के किनारे के क्षेत्र में सर्वत्र पन्द्रह फीट की ऊँचाई में पानी भर जायेगा। तब तक न मनुष्य रहेंगे न पशु और न ही कोई बनस्पति रह जायेगी। यह दशा एक दो शहरों की नहीं अपितु विश्व के अनेक शहरों की होगी। ईश्वर करे दुर्भाग्य की यह दास्तान कभी न हो, किन्तु सुतुरमुर्ग की तरह आंख मूंद लेने से कोई खतरा न टला है और आगे टलेगा।

औद्योगिक कलेवर में मिले और फैक्टरियाँ भी है और ध्रुवी उगलती भट्ठियाँ और पावर प्लान्ट भी है। चारों ओर फैली धुवाँ की चादर आखिर हमें क्या देती है? यह धुन्ध और धुयें की काली चादर तथा कार्बन डाईऑक्साइड यह सब मिलकर जो ताण्डव करती हैं वह अपने आप में बेमिशाल है। स्वच्छंद और निर्मल प्रकृति कोई कुकर्म नहीं करती हैं। यदि हम करेंगे तो उसका बुरा फल हम ही भोगेंगे और कोई दूसरा नहीं।

औद्योगिक क्षेत्र में धुयें से, कोयला कण से वृक्षों के तने काले रहते हैं।

मनुष्य की भाँति अन्य जीवों का स्वशन तंत्र भी प्रदूषण से प्रभावित होता है। धुयें के कारण प्रकाश की पैराबैंगनी किरणों की मात्रा में कमी आ जाती है। पौधे भी वायुप्रदूषण से प्रभावित होते हैं। वायु प्रदूषण के कारण सूर्य के प्रकाश की मात्रा में काफी कमी हो जाती है। जिससे पौधों के प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

प्रदूषण पदार्थ पत्तियों पर एकत्रित होकर पर्णरन्ध्रों को अवरूद्ध कर देते हैं जिसके फलस्वरूप वाष्पोत्सर्जन की प्रक्रिया अवरूद्ध हो जाती है। वायु प्रदूषण वाले क्षेत्रों में वर्षा जल में अनेक गैसों तथा विषैले पदार्थ घुलकर धरती पर आ जाते हैं। जड़ों द्वारा - जल ग्रहण करने के साथ पौधों के शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं। फलस्वरूप बहुत से हरे-भरे पौधे नष्ट हो जाते हैं। औद्योगिक धुएँ में कार्बन कणों के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के हाइड्रो कार्बन भी होते हैं जो पत्तियों पर एकत्रित होकर भौतिक और रासायनिक क्रिया कर पत्तियों को हानि पहुँचाते हैं।

कार, ट्रक, बस मोटर साइकिल से निकलने वाले धुएँ में इथोलिन रहता है जिसके कारण वृक्षों में फलों की कोरोनेशन पेटेल्स भीतर की ओर मुड़ जाती हैं। जापान में कारों से इतना धुवाँ निकलता है कि व्यस्त मार्गों का यातायात नियंत्रित करने वाला सिपाही थोड़ी-थोड़ी देर में आक्सीजन ग्रहण करने के लिये आक्सीजन प्रदान करने वाली मशीनों के पास जाता है। अमेरिका में पैसठ प्रतिशत प्रदूषण मोटर कारों के धुवा से होता है। जापान के स्कूली बच्चे जालीदार मुखौटा पहनकर स्कूल जाते हैं। भड़कदार फूल जैसे शतावरी के वाइय दल सूख जाते हैं तथा रंगहीन हो जाते हैं।

धातु पिघलने से निकले धुएँ में कार्बन के अलावा ताँबा, जस्ता आदि धातुएँ भी अधिक मात्रा में होती हैं। यह पौधों के लिए हानिकारक होती हैं। कुछ पौधे इतने संवेदनशील होते हैं कि वे प्रदूषण के सूचक का काम करते हैं। जब प्रदूषण की मात्रा बढ़ जाती है तो इन पौधों में विशेष चिन्ह पैदा हो जाते हैं। बरगद, सलबनिया, दहलिया, तथा चीड़ की पत्तियाँ के ऊपर अधिक प्रदूषण के कारण हल्के चकत्ते पड़ जाते हैं। पत्तियाँ किनारे से मुड़ जाती हैं। वायु में उपस्थित प्रदूषण पदार्थों के छोटे-छोटे कण प्रकाश किरणों को प्रभावित कर देते हैं जिससे दृश्यता कम हो जाती है। समताप मण्डलीय ओजोन पर सुपर सोनिक वायुयानों द्वारा अधिक ऊँचाई पर प्रदूषक पदार्थों के विसर्जन से समताप मण्डलीय ओजोन पर प्रभाव पड़ता है।

वायु प्रदूषण पृथ्वी के तापमान बादलों तथा वर्षा पर प्रभाव डालते हैं। मौसम में परिवर्तन लाने में सक्षम होते हैं। आकाश में कोहरा छा जाने के कारण सूर्य की किरणें पृथ्वी पर कम मात्रा में आती हैं। शहरों का तापक्रम गावों की अपेक्षा अधिक देखा गया है। प्रदूषण की उपस्थिति के कारण ताप में परिवर्तन होता है। कंकरीट, सीमेन्ट के भवन, तारकोल

की सड़कों द्वारा ताप को संग्रहीत किया जाता है। धूल-माटी, कटी सड़के, वाहनो के चलने से उठने वाली धूल से वायु प्रदूषण होता है। सड़ी-गली चीजों विशेषकर कचड़ों से वायु प्रदूषण होता है। इससे मनुष्य का स्वास्थ्य, पेड़-पौधों, जीव-जन्तु तथा विशेषकर जलवायु भी प्रभावित होती है। परिणाम स्वरूप मानव स्वास्थ्य पर दुष्परिणाम होता है। नमोनिया, टीबी, कैंसर, हृदय रोग, मधुमेह आदि के लिये इन्हें विशेष रूप से उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। मधु मक्खी तथा अनेक कीट औद्योगिक वायु प्रदूषण से मरते देखे गये हैं। केमिकल फैक्ट्री के रसायन जब नदियों में जाते हैं तो मछलियाँ मर जाती हैं।

शोर भी एक प्रकार का प्रदूषण है, जिसे ध्वनि प्रदूषण की संज्ञा दी गई है। इससे झुँझलाहट तथा अन्य प्रकार की असुविधा होती है। जो ध्वनि मानसिक क्रियाओं में विध्न डालती है उसे शोर कहते हैं। परीक्षाकाल में विद्यार्थियों को ध्वनि प्रदूषण से बचाने के लिये लाउडस्पीकर प्रयोग करने पर रोक लगा दी जाती है। अस्पताल के पास की सड़कों पर गुजरने वाले वाहनो को हार्न बजाने की मनाही रहती है।

इस प्रकार, धूल, धुवाँ और ध्वनि से जो प्रदूषण फैलता है मानव जीवन के लिये हानिकारक होता है। इससे बचने का उपाय किया जाना अति आवश्यक है।

आज तो यह परिस्थिति बन गई है कि मजदूरों के लिये चिमनी से चिता तक की व्यवस्था कर दी गई है। मजदूर मशीन-उत्पादन जनित बीमारियों, चिमनियों के धुयेँ में आखिरी सांस ले रहा है। उदयपुर को पेस्टी साइड, देश में प्लास्टिक करखाने, एसबेस्टस प्रक्रिया एव प्रासेस, सीमेन्ट फैक्ट्रियाँ, कारबाइड गैस जिसके लिए भोपाल गैस कांड कुप्रसिद्ध है। रोग एव मौत का पैगाम लानेवाली साबित हुई हैं।

यद्यपि प्रकृति स्वयं नियंत्रण करती है। वह अपने ऊपर संतुलन बना रहे इसका प्रयास करती है। दूषित पर्यावरण के कारण तथा मनुष्य की अज्ञानता के कारण दुष्परिणाम दिखाई पड़ता है। आज पशु पक्षियों, पेड़ एव वनस्पतियों पर मानव ने बड़ी तेजी से आक्रामक रवैया अपना रखा है। देश में पेड़-पौधों और पशु पक्षियों का विशाल भण्डार खतरे में है। पीढ़ियों से मानव के साथ इनका चला आ रहा अनुबन्ध खतरे में पड़ गया है। मानव समाज इन्हें जोड़ने के बदले तोड़ रहा है। जो देश कभी सोने की चिड़िया कहलाता था उसका सोना तो लुट ही गया कहीं चिड़ाया के लुट जाने के दिन न आ जायँ

। शिकारी और संरक्षकों के बीच बहस जारी है । अभयारण्य अब भय उत्पन्न कर रहे हैं । संवर्धन के ऐसे प्रयास न तो जंगल के राजा के हित में है और न ही गावों में रहने वाली प्रजा के हित में है । शून्य माने जाने वाले आकाश का कोई भाग शून्य नहीं रहा । दुनियाँ के ८६०० प्रजातियों में १२०० प्रजातियों के पक्षी का बसेरा भारत में है । २०६१ रूप रंग के पक्षियों में से १९५० तो भारत के हैं शेष उत्तरी क्षेत्र से आये प्रवासी पक्षी हैं ।

कृषि प्रधान देशों के लिये पक्षी अति महत्वपूर्ण हैं । ये खेत में खड़ी फसलों में लगने वाले कीड़ों को खाकर फसल की रक्षा करती हैं । उदाहरण के लिये चीन में गौरया पक्षी को लोगों ने ढूँढ़-ढूँढ़कर मार कर खा डाला, जिसका दुष्परिणाम यह हुआ कि पूरी की पूरी फसल हाथ से चली गई क्योंकि गौरया पक्षी के अभाव में कीड़ी की भरमार हो गई वे पूरी फसल चट कर गये ।

हमारे देश में नीलकण्ठ धीरे-धीरे गायब हो रहे हैं । गिद्ध भी कम दिखाई पड़ते हैं । चिड़ियों के माध्यम से खान मजदूरों को कार्बन डाईऑक्साइड गैस से सावधान रखा जाता है । आज तो तोता, मैना, चकोर पक्षी भारी संख्या में मारे गये हैं । रासायनिक खाद इनके लिए जानलेवा साबित हुई है । कीटनाशक दवा के छिड़काव से इनके अण्डे टूट जाते हैं । काली गरदन वाले सारस और सारण पक्षी गायब हो रहे हैं । तिब्बत पठार और भूटान तथा लद्दाख में काली गर्दन वाले सारस बहुत कम रह गये हैं । आगे चलकर इन प्रजातियों के पक्षियों के लुप्त होने के अन्देशा है ।

पक्षी सन्देश वाहक हैं । आज भी गावों में यह मान्यता है कि यदि किसी के मकान के ऊपर बैठकर कौवा 'काँव-काँव' करे तो महिलायें कह उठती है- 'मोरी अटरिया पर कागा बोले, कोई आ रहा है ।' आने वाले अतिथि का सन्देश कौवा पहले ही पहुंचा देता है । कबूतरों के द्वारा पत्र पहुंचने की प्रथा प्राचीन काल में बहुत प्रचलित थी ।

मानव अज्ञानता एवं लोभवस अपना ही नुकसान करता है । थाणे में धान की बहुत अच्छी फसल होती है । वहाँ खेतों में बड़े-बड़े मेढक भी होते हैं । वहाँ के किसानों को पता चला कि अमेरिका के लोग मेढक की टांग बहुत पसन्द करते हैं । अब क्या था मेढक पकड़कर टांग काट कर अमेरिका भेजना शुरू हुआ । मेढक टांग काटने के बाद मर जाते थे । बाद में पता चला कि वह जो धान की फसल थी आधी रह गई, क्योंकि जो फसल में कीड़े लगते थे उन्हें मेढक खा जाते थे और धान की फसल सुरक्षित बच जाती थी । युकेलिप्टस

पानी अधिक सोखता है । वर्षा कम होने से युकेलिप्टस और सूखा लाता है । प्रकृति के साथ मिलकर चलें इसलिये प्रकृति के प्रति उच्च बुद्धि भारत के पूर्वजों ने उत्पन्न की हैं । प्रकृति को माता कहा गया । धरती को, गंगा को, नर्मदा को, यहां तक की सभी नदियों को माता कहा । वृक्षों की पूजा की । तुलसी को माता मानकर पूजा की । साँप और नागों की पूजा की, गौ को माता कहा उसकी पूजा की । हाथी को गणेश मानकर पूजा की, पीपल, बरगद व आवला की पूजा की । इन सबके माध्यम से सबके मन में एक भाव उत्पन्न किया कि यह सब मानव जीवन के लिये उपयोगी हैं । यह संतुलन पश्चिमी विकास पथ ने बिगाड दिया ।

गोबर की खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है । जापान के लोग भारत आये थे । दीनदयाल शोध संस्थान की ओर से गोंडा उत्तर प्रदेश में कृषि के बारे में जो विभिन्न प्रकार के प्रयोग चल रहे हैं उसे देखा और उन्होंने हल के नोक की नाप ली जो केवल नौ इंच गहराई में जमीन खोदता है । ट्रैक्टर करीब ढाई या तीन फुट तक जमीन खोदता है जिसके कारण केंचुये ऊपर आकर मर जाते हैं । हल की नोक से केवल नौ इंच गहराई में खोदने के कारण केंचुये नीचे चले जाते हैं और जमीन को चलाते हैं उससे उर्वरा शक्ति बढ़ती है ।

वन धरती पर ३३ प्रतिशत होना चाहिए । अब तो केवल १०-११ प्रतिशत मुश्किल से रह गये हैं । यदि जंगल समाप्त हो गये तो मनुष्य किसके आधार पर जिन्दा रहेगा । प्रकृति में धारण क्षमता होती है । यदि उसकी धारण क्षमता पर आक्रमण हुआ तो वह उसका बदला लेती है । प्रकृति अपने आप सब बातों पर नियंत्रण करती है । अफ्रीका में सेरीगेट मैदान है । जहां सिंह रहते हैं । सिंहों की आबादी नियंत्रित है जब कि सिंहनी एक बार में ६-७ बच्चों को जन्म देती है । सिंह को मारकर कोई खाता नहीं है । सिंहों की संख्या बढ़नी चाहिए किन्तु नहीं बढ़ती है । प्रकृति ने सिंह को बिना कुछ करे कराये खाने का स्वभाव दिया है । सिंहनी शिकार करती है । सिंह सोता रहता है । शिकार करने के बाद वह आवाज देती है । सिंह मस्ती से जाकर शिकार खाकर अपना पेट भर लेता है, जो बचता है वह सिंहनी खाती है । यदि शिकार छोटा रहा तो सिंह सब खा जायेगा । सिंहनी जो बचेगा उसे खायेगी । बच्चे भूखे मर जायेंगे मुश्किल से २-१ बच्चे भगवान भरोसे जीवित रहेंगे ।

लेमांग नाम का जोड़ा खूब प्रजनन करता है। उनकी आबादी तेजी से बढ़ती है। हर पाँच साल बाद प्रकृति उनको प्रेरित करती है वे पानी की ओर भाग कर जाते हैं और डूब कर मर जाते हैं। लेमांग की आबादी नियंत्रित करने का काम प्रकृति ने ले रखा है। बिल्ली एक बार में ३-४ बच्चों को जन्म देती है। प्रकृति ने बच्चा देने के बाद बिल्ली को अधिक भूख लगने की आदत दे रखा है। यदि प्रसव के बाद उसे खाने को न मिला तो वह अपने बच्चों को खाकर भूख मिटाती है। बाद में जो बच जाते हैं उसको पालती है। इस प्रकार प्रकृति बिल्ली की संख्या को नियंत्रित करती है।

आस्ट्रेलिया में खरगोश नहीं थे। भारत से वहाँ खरगोश का जोड़ा ले जाया गया। कुछ वर्षों बाद आस्ट्रेलिया में इतने खरगोश हो गये कि सब्जी की फसल बरबाद हो गई। खरगोश सारी सब्जी कुतर-कुतर कर खा जाते थे। उन्होंने अपनी समस्या भारत सरकार को बतायी। प्रकृति ने खरगोश की संख्या नियंत्रित रखने के लिये भारत में एक घास दे रखा है। खरगोश उस घास को खा लेते हैं तो प्रजनन दर नियंत्रित रहती है। आस्ट्रेलिया ने उस घास को ले जाकर अपने वहाँ लगाया तब जाकर खरगोश की बढ़ती संख्या पर नियंत्रण हो सका।

इसाईत की एक अवधारणा है कि मनुष्य ने पाप किया है। इसलिये आदम-हौवा को जमीन पर भेज दिया कि वहाँ जाकर परिश्रम करने से भोजन पाओगे-स्वर्ग में बड़े मजे किये हो। पृथ्वी पर अधिक से अधिक उपभोग की उनकी अवधारणा है। नदी, पहाड़ तथा जंगल आदि सब मनुष्य के उपभोग के लिये हैं।

इंगलैण्ड में निचले सदन में एक बिल आया कि प्राणियों के प्रति जो क्रूरता होती है उसे रोकना चाहिए। क्रूरता निरोधक विधेयक निचले सदन से पास हुआ किन्तु ऊपरी सदन में जब गया तो उन्होंने इस विधेयक को निरस्त कर दिया। यह विधेयक आर्क विशेष आफ केटवरी जो चर्च आफ इंगलैण्ड के सबसे बड़े पादरी होते हैं उनके पास भेजा गया। उन्होंने निर्णय दिया कि बाइबिल के अनुसार मनुष्य को छोड़कर बाकी सब जड़ पदार्थ होते हैं। उनके अन्दर कोई प्राण नहीं होता। इसलिये उनको मारने पर कोई पाप नहीं लगता। यह अवधारणा अभी तक विद्यमान है। जब कि भारत के जगदीश चन्द्र बसु ने कहा कि पौधे भी सुख-दुख का अनुभव करते हैं। इसको जब मैं जहर का इंजेक्शन दूंगा तो वह सुख जायेगा। उन्होंने इंजेक्शन दिया किन्तु पौधा नहीं सूखा। वह समझ गये

प्याले में जहर नहीं है। उन्होंने प्याला उठाकर पी लिया। बाद में प्रयोगशाला के कर्मचारी ने बताया कि मैंने प्याले में जहर की जगह शकर घोल दिया था। जगदीश चन्द्र बसु को इस कार्य के लिये सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक घोषित किया गया।

पिछली शताब्दी का लेखा-जोखा लें तो यह बात ध्यान में आती है कि मनुष्य ने बहुत बड़ी मात्रा में वायुमण्डल में कार्बन डाईआक्साइड छोड़ी है। इसलिये जलवायु में भयंकर परिवर्तन की सम्भावना है। नई-नई बीमारियों का अभ्युदय और पृथ्वी पर नये-नये जीवाणुओं का जन्म तथा व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर पड़ने वाला दुष्प्रभाव देखने में आता है। ओजोन की परत पतली हो गई है। त्वचा कैंसर का खतरा बढ़ गया है। वनस्पति और जल-जीव पर खतरे की घण्टी बज रही है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सब अभी से मिल बैठकर ऐसा प्रयास करें कि मानव, जल और वनस्पति -इस विभीषिका से बच सके। अन्य जीवों के साथ मानव भी पर्यावरण का एक अंग है किन्तु अन्य जीवों की तुलना में अपने चारों ओर के पर्यावरण को प्रभावित करने की क्षमता अधिक है। इसी कारण पर्यावरण के साथ मानव सम्बन्धों में जो अव्यवस्था आई है उसके कारण समस्त सांस्कृतिक तथा सामाजिक विनाश की विस्फोटक परिस्थिति ने मानव सभ्यता को सावधान कर दिया है। मानव ने परिस्थितियों बस अन्य जीवों की तुलना में अधिक से अधिक शक्ति अर्जित कर लिया है। पर्यावरण के सम्बन्ध में जो व्यवस्था आई है उसके कारण समस्त सांस्कृतिक तथा सामाजिक विनाश की विस्फोटक परिस्थिति ने- मानव सभ्यता को सावधान कर दिया है। वह नई-नई तकनीक के विकास में इतना तेजी से लगा है कि उसको ध्यान नहीं रहा है कि पर्यावरणीय समस्याएं तकनीकी विकास के साथ ही बढ़ रही हैं और बढ़ते-बढ़ते अब तो विकराल रूप धारण कर लिया है। आज के मानव और आदि के मानव में एक मौलिक अन्तर है आदि मानव ने प्रकृति को जैसा पाया उसके साथ वैसा तादात्म्य स्थापित कर लिया। उसने परिवर्तन की अधिक कोशिश नहीं की, इसलिये संतुलन बना रहा। विगत दो सौ वर्षों में मानव ने आर्थिक और सामाजिक जीवन में प्रगति के लिये पर्याप्त प्रयास किये हैं। उनके इस प्रयास का एक मात्र आधार था स्वयं का अधिक से अधिक कल्याण। उसने पर्यावरण की ओर ध्यान नहीं दिया। कृषि में भी उसने उसी फल को उगाया जिसमें अधिक से अधिक उपज हो। अन्य फसलों को छोड़ दिया। परिणाम स्वरूप अधिक पानी और खाद से उगने वाली फसलें रह गईं। शेष सूखे और कम पानी में तैयार होने वाली फसलें लुप्त हो गईं। अन्न

का संतुलन बिगड़ गया है। मानव ने पेट के रोगों मानसिक विकार तथा अन्य प्रकार के रोगों को नियंत्रित कर सकने में सफलता पाई है जिसके परिणामस्वरूप आबादी में अधिक वृद्धि कर ली है। अधिक चमत्कारिक प्रौद्योगिक क्षेत्र में प्रगति कर अपनी सम्पदा में अबाधित वृद्धि की है। मनुष्य ने अपनी प्रगति कर ली और जीवन स्तर को ऊंचा उठाया किंतु अब यह अनुभव में आया है कि इतनी बड़ी प्रगति मनुष्य ने पर्यावरण की वृहद समस्याओं को उत्पन्न करके अर्जित की है। जल प्रदूषण, धुर्वे द्वारा प्रदूषण, घटते वन्य जीव, प्राकृतिक सम्पदा का दुरुपयोग यह सब व्यक्ति तथा सामाजिक पर्यावरण तथा मानव एवं पर्यावरण की परस्पर किया एवं प्रतिक्रिया को न समझ पाने के फल स्वरूप ही हुआ है। उपरोक्त कारणों से मनुष्य को प्रकृति के तिरष्कार का परिणाम भी भोगना पड़ा। पर्यावरण से बचने के प्रयास में मनुष्य पर्यावरण के चगुल में फँसता ही गया। इन्हीं सब कारणों से इस बात की प्रबल आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है कि किस प्रकार प्रकृति का संतुलन पुनः प्राप्त किया जा सके। अब हमें अपने तकनीकी कौशल का उपयोग अपने खोये हुए पर्यावरण को पुनः प्राप्त करने के लिये करना होगा। स्वयं निर्मित इस सांस्कृतिक तथा भौतिक वातावरण में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए हमें अब कुछ धारणाओं तथा विधियों का विकास करना होगा जिनसे कि पर्यावरण के सभी पक्षों का प्रायोगिक तथा मात्रात्मक स्तर पर अध्ययन किया जा सके तथा मानव संरक्षण की दिशा में उचित कदम उठाये जा सके। मानव पर्यावरण वास्तव में पृथ्वी को प्राकृतिक स्रोतों या मानव द्वारा उनके सांस्कृतिक रूपान्तरण का अर्थ है कि प्राकृतिक स्रोतों से मानव उपयोग हेतु आवश्यक परिवर्तन। एक समय था जब प्राकृतिक स्रोतों में प्राण है - ऐसा समझा जाता था। प्राकृतिक साधनों में जीव है वह पुनः पैदा होने या स्थापित होने में सक्षम है। इनमें निरन्तर निर्माण होता रहता है। इनकी मात्रा में वृद्धि होती रहती है। प्रजनन रत जैव साधन उचित देखरेख में पुनः उपयोगी सामग्री प्रदान करने लगते हैं। जीव साधनों की एक विशेषता है वह है उनके पारस्परिक सम्बन्ध। यदि कोई वन जलाया जाता है या जंगल में आग लग जाती है तो इससे केवल वृक्ष ही नहीं अपितु मिट्टी, झरने, भूमिगत जल प्रवाह, जल में रहने वाली मछलियाँ तथा जंगल में रहने वाले पशु तथा अन्य जीव भी प्रभावित होते हैं। मानव की गतिविधियों के बढ़ने के कारण वायु प्रदूषण होता है। सौर ऊर्जा भी प्रभावित होती है।

ऐसे साधन जिनकी पुनः स्थापना नहीं हो सकती है जैसे लौह अयस्क, पेट्रोल, कोयला यदि पूरा उपयोग कर लिया गया तो समझिये की समाप्त हो गया । पूरा उपयोग करने से पहले इनका विकल्प (सब्सिच्युट) खोजना होगा या उनके बगैर ही काम चलाना होगा । वन, घास, वन्य-जीव आदि की दूसरे क्षेत्रों - से लाकर स्थापना की जा सकती है-जैसे आस्ट्रेलिया में खरगोश नहीं थे । भारत से ले जाकर उनकी स्थापना की गई । पुनः स्थापना का तात्पर्य है कि उस जीव की इस धरती पर कहीं न कहीं उपस्थित हो । यदि किसी जीव का धरती से ही अस्तित्व समाप्त हो जायेगा तो उसकी पुनर्स्थापना नहीं हो सकती है जैसे अमरीकी डायनसोर ।

एक संसाधन से दूसरे संसाधन प्रभावित होते हैं जैसे कोयला की खुदाई और बाध निर्माण से वन प्रभावित होते हैं । पेट्रोल के जलने से वृक्षों की वृद्धि प्रभावित होती है । फर्टीलाइजर कारखाना के पास यदि कोई फल देने वाली बाग है तो उसमें फल-फूल नहीं आते हैं ।

प्राकृतिक सम्पदा का संरक्षण करते हुए उपयोग करना सर्वोत्तम है । मिट्टी जैविक कारको पर करती है । अगर ये कारक न हो तो भू-संरक्षण की समस्या उत्पन्न हो सकती है । इसलिये किसी भी समुचित संरक्षण कार्यक्रम में मिट्टी, जल, वन और अन्य वनस्पति को शामिल किया जाना चाहिए । वन का विनाश सबसे अधिक रेलवे ने किया । रेल स्लीपर बनाने के लिये कीमती सागौन के पेड़ काटे गये । अब तो विवश होकर उसने सीमेन्ट, कंकरीट तथा सरिया से युक्त स्लीपर बनाना प्रारंभ किया है । यह काम बहुत पहले भी हो सकता था किंतु रेल विभाग ने ध्यान नहीं दिया ।

जंगल बरबाद करने का सारा दोष अंग्रेज वनवासियों पर मढ़ देते थे । स्वतंत्रता के बाद सरकार ने जंगल भू स्वामियों की जमीन पर खड़े पेड़ के स्वामित्व का अधिकार उन्हें दे दिया । ठेकेदारों ने भोले-भाले वनवासियों को नाम मात्र का पैसा देकर लाखों पेड़ खरीदकर काट डाले । साथ ही ठीकेदारों ने सरकारी जंगल का इलाका भी उजाड़ दिया । छत्तीसगढ़ बरतर जिले में एक प्रकाशन के अनुसार १६५६-१६८१ के मध्य में १२५ .४८३ हेक्टेयर जंगल साफ किये । जल विद्युत परियोजना एवं अन्य योजनायें जिनमें पेपर मिलें शामिल हैं ने वन को पूरी तरह से निगल लिया । वागेश्वर जिला (उत्तरांचल में) खड़िया पत्थर की खुदाई के लिए पेड़ों की कटाई हुई । टिहरी बांध परियोजना में भी

बहुत बड़ी संख्या में पेड़ काटे गये । वहां की जनता ने पेड़ों को बचाने के लिये चिपको आन्दोलन चलाया । वनों की कटाई का दुष्परिणाम है कि चेरापूंजी जो अधिकतम वर्षा का केन्द्र था । वह अब नहीं रहा । अब लोगों के ध्यान में आया है कि वनों को बचाना चाहिए, पेड़ लगाना चाहिए । वृक्ष को अपने यहां शंकर कहा गया । शंकर विष पीकर नीलकंठ कहलाये । वृक्षधारी जहरीली गैस पीकर हमें स्वास्थ्यवर्धक आक्सीजन देते हैं । वे हमारे जीवन रक्षक हैं ।

गुजरात के धर्मपुरा क्षेत्र में वनवासी लोगों ने वृक्ष लगाने का अभियान चलाया है । मीरजापुर में रिशत वनवासी -सेवाश्रम निजी तथा सामुदायिक जमीनों पर सामाजिक बानकी कार्यक्रम चला रहा है । मध्य प्रदेश इन्दौर महू तहसील के गांवों में प्रत्येक परिवार को घर बगिया के लिये अनेक प्रकार के पौधे दिये गये हैं । उड़ीसा ढेंकानल जिले में वनवासी संगठित होकर पेड़ों की रक्षा कर रहे हैं ताकि पेड़ों की कटाई न हो सके । वहां वृक्षारोपण भी हो रहा है । वनवासी गांव वालों को जंगल में घुसने नहीं देते हैं ।

सेवा सरथान ने गिरिनार पर्वत की लकड़हारियों को संगठित किया है और कहा गया है कि वन के पेड़ नहीं काटेगे बशर्ते सरकार हमारी रोजी-रोटी को व्यवस्था करे । लकड़हारिने गिरिनार को अपना पिता मानती हैं जिनके हाथ अब तक पेड़ काटते रहे वे ही अब गिरिनार वन को हरा-भरा देखना चाहती हैं । गुजरात सरकार ने यदि गिरिनार पर्वत की लकड़हारियों की रोजी-रोटी की व्यवस्था की है तो अन्य प्रान्त क्यों नहीं करते हैं ।

मध्य प्रदेश में वनवासी परिवार बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कर रहा है । महाराष्ट्र चन्द्रपुर वनराजिक महाविद्यालय के छात्रों का काम अत्यन्त सराहनीय है । गुरुदेव रवीन्द्र ठाकुर श्रावण मास की २२वीं तारीख को शान्ति निकेतन में एक बड़ा समारोह करते थे । फूलों से सजी पालकी में एक छोटे से पौधे (बाल तल को रखकर बड़ी धूमधाम से लाया जाता था । प्रेमपूर्वक उसे किसी जगह रोपा जाता था । बाबा आमटे ने भी इसी प्रथा को अपने यहां अपनाया । उन्होंने चन्द्रपुर से बरोरा तक ४१ किलोमीटर की पदयात्र की । अपने साथ पालकी में बाल तरू लिये थे । छात्र गाते-बजाते पेड़ लगाते गये । सामुदायिक वृक्षारोपण को यदि पुरुषार्थ का रूप देना है तो ऐसे सब प्रयास करने होंगे । आज समाज टूट रहा है । ऐसे सामुदायिक प्रयास से यदि समाज का टूटना बन्द हो जाय तो अच्छा ही

होगा साथ ही पर्यावरण दूषित होने से बच जायेगा । वनों में की जानेवाली अधिकांश गतिविधियाँ वन वासियों कोर-विस्थापित करने वाली साबित हो रही है । वन नीति के निर्धारण में वन वासियों का कोई स्थान नहीं है । बहुत हुआ तो वनवासी इन योजनाओं में मजदूरी पर जाते हैं ।

आज अनेक बांध बन रहे हैं, जहां आधुनिक विकास का स्पर्श नहीं है । बाध बंधने से वन पर संकट आयेगा । हजारों परिवार भी उजड़ने । भाखरा बाध के कारण २१०० परिवार में ७३० परिवार अपने आप को बचा पाये हैं । हिमालय में बसे ७०० परिवारों को पोग बाध बनने के कारण उन्हें तपते रेगिस्तान में बसा दिया गया । भाखरा से निकलने वाली नहर क्षेत्र में पानी का स्तर प्रतिवर्ष एक मीटर की रफ्तार से ऊंचा उठा रहा है । नहर के पैसठ प्रतिशत क्षेत्र में भू-जल खारा हो रहा है । पिछले कई वर्षों से जगह-जगह बाध और पन बिजली का विरोध हो रहा है ।

केरल में सौरन्धी वन और मन्नार, कर्नाटक में वेडची, उत्तरांचल में टिहरी, बिहार में कोयकारों आदि योजनाओं का कडा विरोध हो रहा है । नर्मदा पर बने सरदार सरोवर बांध से विस्थापितों को आज तक समुचित रूप से बसाया नहीं जा सका है ।

देश में सभी बांध डुबोने में चुस्त और बसाने में सुस्त है । नकद मुवावजा देने के सिवाय लोगों को फिर से प्यास विफल है ।

वन खण्ड में विचरने वाले पशु अपर वन को नहीं उजाडते हैं । संसार का सबसे उत्तम प्राणी मनुष्य अपनी दुनियाँ को स्वयं उजाड़ने में रातोदिन प्रयत्नशील है । इस विनाश के पीछे चाहे जितने आर्थिक और विकास के प्रलोभन क्यों न हों मानव तृष्णा के नवीनतम संस्करण क्यों न हो, एक बात सत्य है कि वन विनाश का अर्थ है सृष्टि का सर्वविनाश । वन सम्पदा के अभाव में मानव विकास का अध्याय लिखने वाले केवल दिवा स्वप्न में ही रहते हैं । यथार्थ की दुनियां से कोसो दूर रहते हैं । वनों को काटने का अर्थ है जीवन दायिनी आक्सीजन की मात्रा में भयंकर कमी । जलवायु में भयंकर परिवर्तन और वायुमंडल में अधिक गर्मी का संचारण । इन सबसे मनुष्य कैसे छुटकारा पा सकेगा यह सोचने की बात है । मनुष्य क्यों भूल जाता है कि वृक्ष प्राण वायु देते हैं । मनुहार कर बादलों को बुलाते हैं, मिट्टी का कटाव रोकते हैं, जड़ी-बूटियों का उपहार देते हैं और भूमि को उपजाऊ बनाए रखते हैं । वनों के कटते रहने से कार्बन डाइआक्साइड का

स्तर असंतुलित हो जायेगा। पेड़-पौधों के अभाव में प्रकाश संश्लेषण क्रिया द्वारा कार्बन डाईऑक्साइड विघटित कर ऑक्सीजन छोड़ने की क्रिया नहीं हो पायेगी।

पृथ्वी की यह अग्नि परीक्षा है और परीक्षा के कुछ परिणाम अभी से आने लगे हैं। गर्मी में ग्लेशियर पिघलने लगे हैं। अटलांटिक क्षेत्र के विशाल भूखण्ड पर यदि गर्मी पड़ी तो समुद्र के जल स्तर को ऊँचा उठने से कौन रोक सकेगा। समुद्र के किनारे बने बन्दरगाह तो इसकी पहली चपेट में ही जल समाधि लेंगे।

वनो में पाई जाने वाली वनस्पतियों की विविधता ही उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। मानव जीवन में वनों का महत्व रहा है। आदि मानव ने भोजन कपड़ा, आवास सब वनों से प्राप्त किया है। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ दोनों के सम्बन्धों में परिवर्तन आये हैं। मानव की जीवन निर्भरता वनों पर किसी न किसी रूप में आज भी बनी हुई है। अनेक आदिम जातियाँ आज भी वनों में निवास करती हैं। साम्य जगत यदि पूर्णतया से नहीं तो आंशिक रूप से वनों पर निर्भर करता है। इमारती लकड़ी, जलावन लकड़ी, लकड़ी का कोयला, प्लाईवुड, बांस, बेंत, कागज बनाने के लिये -लुगदी का सामान, फल फूल, केंदूड़ पत्ता, पशुचारण, औषधियाँ, जड़ी-बूटी, गोद, रबड़, तारपीन तेल, रेशम पदार्थ, कत्था, सुपाड़ी, चिरौंजी, लाख आदि प्रमुख चीजें मनुष्य को वनों से प्राप्त होती हैं। पशु, पक्षी वनों में मिलने वाले वनस्पति पर पलते और बढ़ते हैं। जल तथा वायु द्वारा मिट्टी का संरक्षण करते हैं। वर्षा ऋतु में जल को रोककर बाढ़ की सम्भावनाओं को कम करते हैं। पेड़ छाया तथा फल देते हैं। मिट्टी के वाष्प को रोकते हैं। हानिकारक गैसों का वायुमण्डल से अवशोषण कर पर्यावरण को स्वस्थ बनाये रखते हैं। वायुमण्डलीय आर्द्रताओं को सुरक्षित रखकर वर्षा कराने में सहायक होते हैं। ग्रीष्म में तापमान घटाते हैं। शीत में ताप बढ़ाने में सहायक होते हैं। भूमि को उर्वरक बनाते हैं। वनों में रहने वाले जीव जन्तुओं के आवास की व्यवस्था भी जंगलों से होती है। निस्संदेह वन का महत्व है। अपने यहां तो जीवन के एक भाग वनों में जाकर बिताने की प्रथा थी। भगवान श्री रामचन्द्र का चौदह वर्ष का वनवास जगत प्रसिद्ध है। सन्यासी दस नामी होते हैं। पुरी, तीर्थ, सागर, आरण्य, भारती, सरस्वती आदि। सन्यासी दयानन्द लोगों को दीक्षाएँ देते रहे। दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक बुराइयों को दूर करने, महिलाओं को शिक्षित करने पर जोर दिया तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' नाम का विषद ग्रंथ लिखा। अरण्य में जीवन बिताने वाले सन्यासियों ने वहां के मानव को सुसंस्कृत करने का प्रयास

किया । आज कल्याण आश्रम इसी कार्य में लगा है । अण्डमान में रहने वाले आदिवासी जोरवा को एक सभ्य जीवन बिताने के लिये प्रयासरत है । ये आदिवासी जिनके न घर हैं, न किसी के तन पर वस्त्र है, जो वनों में मिला उसी से गुजारा करते हैं । वे जंगली पशुओं को मारकर खाते हैं । हिरन स्वच्छन्द चिरते हैं उन्हें वे नहीं मारते हैं । तीर धनुष इनके शस्त्र व अस्त्र हैं । वे अपने में बदलाव लाने के घोर विरोधी हैं । जगल ही उनकी पीढ़ी दर पीढ़ी का संरक्षक है ।

सर्वोच्च न्यायालय के एक निर्णय के बाद आज अण्डमान नीकोबार में भी जंगल की लकड़ियाँ (पेड़) काटने पर प्रतिबन्ध है । करीब ५४६ टापुओं में ४६ में आबादी है -शेष में घने जंगल हैं जिनका कोई उपयोग नहीं है । उल्टे मगर, मछली और जंगली, लकड़ी स्याम व थाईलैंड के लोग काटकर बड़ी-बड़ी स्टीमर से न ले जाय उसकी वायुयान से पिट्रोलिंग की जाती है । अण्डमान नीकोबार द्वीप में यह स्थिति है वहीं पूरा विश्व जंगली जीवों की महा विलुप्ति काल में झेल रहा है । वैशालिक प्रकृति प्रेमियों एवं पर्यावरण के जानकार लोगों के अनुमान के अनुसार अगर यही स्थिति सतत बनी रही तो इस बात में कोई शक नहीं है कि आगे चलकर पशु, पक्षियों छोटे जीव जन्तुओं और पेड़ पौधों की अनेक प्रजातियाँ विलुप्त हो जायेंगी । जीव विलुप्ति के इन्हीं कारणों से शनैः शनैः पृथ्वी मानव जाति के आवास योग्य नहीं रह जायेगी । अतः हम सभी इस ओर गंभीरता से विचार करें और श्रीमती अमृता देवी के वृक्षों की रक्षार्थ किये गये बलिदान से प्रेरणा लेकर वनों और उनके वृक्षों एवं अन्य जीवों को बचाने में श्री किशोर सिंह और स्वर्गीय निहाल चन्द धारिण्या के बलिदान को याद करते हुए वन एवं वन्य जीवों की सुरक्षा संवर्धन एवं संरक्षण में यथा सम्भव योगदान व भागीदारी अवश्य निभायें जिससे आने वाली भावी पीढ़ी को रहने योग्य स्वच्छंद पर्यावरण उपलब्ध हो सके एवं वनों-वृक्षों ३३ आवश्यक वनों उत्पादों की आपूर्ति सतत बनी रह सके ।

व्यक्ति के व्यक्तित्व की महानता एवं अमरता उसके व्यवहार एवं कर्तृत्व पर निर्भर करती है । राजस्थान में पर्यावरण संरक्षण एवं मरूस्थल के 'कल्पतरू' खेजड़ी वृक्षों की रक्षार्थ अपने प्राणों की आहुति देने की विश्व इतिहास की अविस्मरणीय एवं अद्वितीय गौरव पूर्ण घटना भारत में विक्रम सम्बत् १७८७, २८ अगस्त सन् १७३० भाद्रपद शुक्ल दशमी मंगलवार के दिन तत्कालीन मारवाड़ रियासत (वर्तमान जोधपुर संभाग) की राजधानी जोधपुर से लगभग २५ किलोमीटर दूरी पर स्थित खेजडली ग्राम में घटित हुई । जहा

विश्वोई समाज के प्रवर्तक गुरु जन्मेश्वर के प्रयास से खेजड़ी के वृक्ष बहुतायत में उपलब्ध थे ।

जोधपुर किले व महलों के निर्माण एवं संधारण हेतु चूना पकाने की आवश्यकता की पूर्ति के लिए लकड़ी की आवश्यकता थी । तत्कालीन शासक अजीत सिंह ने अपने कारिन्दों को आदेश दिया कि वे खेजडली गांव से खेजड़ी के वृक्ष काटकर लावें । शासक के कारिन्दे जब वृक्षों को कटवाने के लिये उक्त क्षेत्र में पहुंचे तो स्थानीय लोगों ने मरू प्रदेश के जीवनदायक बहुउपयोगी वृक्ष खेजड़ी की कटाई का विरोध किया । शासक के दीवान ने सख्ती बरतकर वृक्षों को काटने का आदेश कारिन्दों को दिया । दीवान बलपूर्वक वृक्षों की कटाई प्रारम्भ करवा दी । प्रशासन की सख्ती का विरोध करने का साहस प्रजाजन नहीं जुटा पाये । ऐसी विषम परिस्थिति में खेजडली ग्राम की श्री रामो विश्वोई की धर्म पत्नी वीरांगना श्रीमती अमृता देवी (इमरती देवी) की अगुवाई में ३६३ किसान वर्गीय ग्रामीण वीरों और वीरांगनाओं के साथ छोटे-छोटे बालक-बालिकाओं ने भी खेजड़ी वृक्षों को बचाने के लिये अनूठे तरीके से शासन का विरोध किया । अमृता देवी वृक्ष से चिपक गई । उन्हें उसी वृक्ष के साथ ही काट दिया गया । अमृता देवी की दो मासूम पुत्रियों ने भी अपनी माँ का अनुसरण करते हुए अपने प्राणों का -बलिदान किया । इसी प्रकार खेजड़ी के काटे गये एक एक वृक्ष के पेटे सटे "सिर साटे रूख रहे तो भी सस्ता जाण" की आवधारणा के साथ बलिदानी विरोध स्वरूप सिर शासक के कारिन्दों द्वारा कटवाते रहे । दीवान के सामने कटे मुण्डों की ढेर लग गई । जिसमें ६६ महिलाओं के सिर थे । यह हृदय विदारक सिलसिला सात आठ दिन तक चलता रहा । सातवें दिन नव विवाहित मुकलावा अपनी पत्नी के साथ जब बलि दिया तो निर्वाध स्वेब्दिक बलिदान का समाचार सुनकर शासक का कठोर हृदय द्रवित हो गया और उन्होंने क्षमायाचना के साथ उस क्षेत्र में से खेजड़ी सहित सभी हरे वृक्षों की न केवल कटाई रूकवा दी बल्कि तब से उस क्षेत्र में से हरे वृक्षों की कटाई पर कठोर दण्ड का प्रावधान भी लागू करवा दिया जो आज भी ज्यों का त्यों लागू है ।

पर्यावरण प्रदूषण रूपी जिस दानव से समूची मानव सभ्यता आज भयभीत है उसका आभास उस महान वीरांगना को आज से २७१ वर्ष पूर्व ही हो गया था । उसकी प्रेरणा

का ही फल है कि थार के रेगिस्तान में आज बहुउपयोगी खेजडी वृक्ष चल की तरह पसरे हुए हैं । अन्यथा यह प्रजाति अन्धाधुन्ध कटाई से लुप्त प्राय हो जाती ।

श्रीमती अमृता देवी एवं उसके साथियों का, वृक्षों की रक्षा के लिए बलिदान पूरे विश्व के लिए एक प्रेरणा स्रोत एवं ज्योति पुंज बन गया है । आजकल उत्तरांचल में वृक्षों वनों के संरक्षण हेतु श्री सुन्दरलाल बहुगुणा द्वारा चलाया गया चिपको आन्दोलन खेजडली गांव के अमर बलिदानों के बलिदान की प्रेरणा का ही प्रतिफल है ।

आज इन्हीं बलिदानों की प्रेरणा से उत्तरांचल की श्रीमतर बाली देवी १९७४ से चिपको आन्दोलन के तहत पेड़ों की सुरक्षा और पर्यावरण के संरक्षण में लगी हुई हैं । वे संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा नौरोबी में आयोजित हो रहे पर्यावरण सम्मेलन में ११ अक्टूबर २००४ को भारत के प्रतिनिधि के नाते भाग ले चुकी हैं । श्री अशोक भगत लोहरदगा विश्प्लर ने एक लाख वृक्षारोपण किया । जिसके उपलक्ष्य में वर्ष १९९३ के सितम्बर मास में महामहिम राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने उन्हें इन्दिरा प्रियदर्शनी शैली वृक्ष मित्र पुरस्कार से सम्मानित किया । उन्हें एक और पुरस्कार विवेकानन्द सेवा पुरस्कार १९९३ कलकत्ता की कुमार सभा पुस्तकालय द्वारा दिया गया ।

बांगरी मथाई नौरोबी, जिन्होंने १९७७ से ग्रीन बेल्ट मूवमेन्ट चलाया है और अब तक ३ करोड वृक्षारोपण कर चुकी हैं । उन्हें शान्ति का नोबुल पुरस्कार दिये जाने की घोषणा हुई है ।

इस प्रकार के प्रोत्साहन से दूषित पर्यावरण को ठीक करने के लिये लोग आगे आयेंगे पर्यावरण की शुद्धता के लिये प्रयास करेंगे ।

इसी बात को ध्यान में रखकर ग्राम खेजडली में बलिदान स्थल पर विश्वोई समाज द्वारा स्मृति स्मारक का निर्माण करवाया गया है । प्रतिवर्ष भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की दसवीं को मेला लगता है । जिसमें राजस्थान के अतिरिक्त दिल्ली हरियाणा पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं गुजरात राज्यों से हजारों की संख्या में श्रद्धालुगण सम्मिलित होते हैं और उस महान वरिगना एवं सहयोगी शहीदों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं । वन एवं अन्य जीवों की रक्षा हेतु प्रेरणा प्राप्त करते हैं ।

राजस्थान प्रदेश की सरकार ने वन विषयक व्यक्तिगत पुरस्कार की घोषणा की है । जिसने अपनी या सार्वजनिक भूमि पर ५००० वृक्ष का रोपण किया हो उसे यह पुरस्कार दिया जाता है । वनजीव विषयक व्यक्तिगत पुरस्कार के अन्तर्गत वन्य जीव संरक्षण, सुरक्षा एवं इनके आवास स्थलों के विकास में उल्लेखनीय सहयोग करने वाले व्यक्ति इस पुरस्कार के हकदार होते हैं । अमृता देवी पुरस्कार प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल दशमी को जोधपुर जिले के खेजड़ली ग्राम स्थित अमृता देवी स्मारक पर आयोजित होने वाले वृक्ष शहीद मेला समारोह में चयनित व्यक्ति संस्था को प्रदान किया जाता है । वर्ष १९९७-९८ से प्रतिवर्ष अगस्त में होने वाले राज्य उत्तरीय समारोह वन महोत्सव आदि में पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है ।

अरावली पर्वत श्रृंखला की तलहटी में बसे गुलाबी शहर जयपुर स्थित विश्व बानकी उद्यान के सन्निकट झालना क्षेत्र में वीरांगना अमृता देवी की स्मृति में सरकार द्वारा अमृता देवी वृक्ष उद्यान की स्थापना कर २७७वीं पुण्य तिथि पर जन उपयोग के लिए अर्पित किया गया है । ३५ हेक्टेयर क्षेत्र पर फैले हुए इस वृक्ष उद्यान में दुर्लभ प्रजाति के पेड़-पौधे भू-क्षरण को रोकते हैं ।

अमृता देवी बलिदान दिवस २८ अगस्त को विश्व में पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए । शायद पर्यावरण संरक्षण के लिये अपना निज का बलिदान विश्व के किसी देश में नहीं हुआ है । अतः पर्यावरण की रक्षा का प्रयास किया जाना चाहिए ।

॥भारत माता की जय॥

राम प्रकाश मिश्र द्वारा लिखित पुस्तकें -

प. राष्ट्र की अस्मिता

२. आर्थिक दासता का फन्दा -डंकल प्रस्ताव

३. बढती मंहगाई घटते सूचकांक

४. समर्पण

५. व्यष्टि से समष्टि

Digitised By Swadeshi Vichar Kendra

B-708, Marwar Apartment,
14-E, Chopasani Housing Board,
Jodhpur 342008, Rajasthan

email: thehinduway@gmail.com

mob. 9414126770

ph. 0291-2710123

Please Help the Website By sending us Shradhyaya Dattopant Thengadi's Books,
Audios, Videos, Photos, Letters, Articles, etc.

विनम्र निवेदन

श्रद्धेय दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी की पुस्तकें, ऑडियो भाषण, वीडियो, फ़ोटो, लेख, पत्र आदि भेज कर
वेब साईट के लिए सहयोग करें।